श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

गुरु पूर्णिमा १०-०७-२०२५

आत्म चैतन्य साधना

विधान: साधक या साधिकाये साधना से एक दिन पहले यानि रविवार को इच्छा प्रकट कर सिद्धि फल को किसी मंदिर में या बड़े वृक्ष के पास रखे या नदी/समुद्र मे विसर्जन करे , और सोमवार को प्रात: काल (ब्रह्म मुहूर्त श्रेष्ठ) स्नान आदि से निवृत होकर पीले वस्त्र पहन कर पूर्व दिशा कि ओर बैठे और सामने बजोठ पर गुरु चित्र और आत्म यंत्र स्थापित कर पंचोपचार पूजन करे | तत्पश्चात गुरु मंत्र का एक या पांच माला जप कर साधना आरंभ करें | सोमवार से आरंभ कर १५ दिन नित्या ५१ माला जप करे | इस साधना द्वारा साधक को गुरु से सामिप्यता बढ़ेगी और गुरु की सूक्ष्म उपस्थिति का अनुभव भी होगा। यंत्र और माला १६ दिन से २१ दिन के अंदर समुद्र में , नदि में, घने जंगल में विसर्जन करे | नैवेद्य सधाक स्वयं ही ले |

मंत्र: || ॐ ह्रीं आत्म चैतन्यै ह्रीं फट् ||

सामाग्री: आत्म यंत्र , चैतन्य माला, सिद्धि फल

जप संख्या: ५१ माला

****